v) कादम्बरी में कितने जन्मों की कथा का वर्णन है ?

....

....

....

....

vi) चन्द्रापीड की प्रेमिका कौन है ?

....

....

....

....

अभ्यास प्रश्न

1) 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' इस कथन की विवेचना कीजिए।

2) बाणभट्ट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2.4 दण्डी

प्रिय विद्यार्थियों! इकाई के इस खण्ड में आप महाकवि दण्डी के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

2.4.1 जीवन-वृत्त

संस्कृत गद्यकाव्य के इतिहास में सरल, प्रांजल और भावपूर्ण गद्य के लेखक के रूप में दण्डी का नाम अमर है। दण्डी के विषय में जो सामग्री प्राप्त होती है उसका आधार 'अवन्तिसुन्दरीकथा' है। इसमें उन्होंने अपने वंश के विषय में बताते हुए कहा है कि उनके पूर्वज आनन्दपुर नामक स्थान पर निवास करते थे और यह क्षेत्र कुशिकगोत्रीय ब्राह्मणों का अधिष्ठान था। यहीं से एक शाखा नासिक्य प्रदेश चली गई जिसने अचलपुर को अपना निवासस्थान बनाया। उसी अचलपुर में श्रीनारायण स्वामी के घर पर दामोदर का जन्म हुआ और उन दामोदर के तीन पुत्रों में मध्यम पुत्र मनोरथ के भी चार पुत्रों में कनिष्ठ वीरदत्त की कनिष्ठतम सन्तान के रूप में दण्डी का जन्म हुआ। इसके अनुसार दण्डी किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के रचयिता भारवि के प्रपौत्र हैं। भारवि का ही दूसरा नाम दामोदर है। दण्डी की माता गौरी थीं। बाल्यावस्था में ही इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। एक चालुक्य राजा ने कांची नगर पर आक्रमण करके उसे लूट लिया। आत्मरक्षार्थ दण्डी भी वहाँ से अन्यत्र चले गए। बहुत समय तक वे इधर-उधर घूमते हुए उच्चशिक्षा प्राप्ति में लगे रहे, जब राजा नरसिंह वर्मा ने पुनः कांची पर अधिकार कर लिया तब वे भी कांची वापस आ गये और वहीं उन्होंने अवन्तिसुन्दरीकथा ग्रन्थ की रचना की। दण्डी ने काव्यादर्श में महाराष्ट्री प्राकृत और वैदर्भी रीति की प्रशंसा की है। दशकुमारचरित में कोची नगर, कावेरीपत्तन, आन्ध्र, चोल, कलिंग, आदि प्रदेशों के साथ विन्ध्याटवी का वर्णन किया गया है। इस आधार पर उन्हें दक्षिणात्य माना जाता है।

दण्डी के काल के विषय में विद्वानों में मतभेद है एक दल छठीं शताब्दी ई0 का मत प्रस्तुत करता है तो दूसरा दल उन्हें 700 ई0 के आस पास मानता है। काव्यादर्श (1.34) में दण्डी ने प्रवरसेन विरचित सेतुबन्ध नामक प्राकृत काव्य का उल्लेख किया है जिससे यह सिद्ध

होता है कि उनका समय प्रवरसेन के बाद का है। प्रवरसेन का समय 410-440 ई0 के मध्य माना जाता है। इसलिए दण्डी 440 ई0 के पश्चात् ही हुए होंगे। दण्डी ने अवन्तिसुन्दरीकथा में बाणभट्ट की कादम्बरी के सारांश को ही देने का प्रयास किया है और साथ ही साथ काव्यादर्श (2.17) में '**यूनां यौवनप्रभवं तमः**' जैसे शुकनासोपदेश के पदों को भी अपनाया है। इस तरह दण्डी के समय निर्धारण के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि दण्डी का समय 650-750 ई. के मध्य रहा होगा।

2.4.2 कर्तृत्व

दण्डी की रचनाओं को लेकर विद्वानों में मतभेद है। शारङ्गधरपद्धति में दण्डी की तीन रचनाओं का उल्लेख किया गया है।

त्रयोऽग्नयस्त्रयो देवास्त्रयो वेदास्त्रयो गुणाः।
त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः।।

शारङ्गधरपद्धति 174,राजशेखर।

शारङ्गधरपद्धति के उपरोक्त पद्य से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि दण्डी ने तीन प्रबन्धों की रचना की, परन्तु ये प्रबन्ध कौन-कौन से हैं इस पर विचार करते हैं। बहुधा विद्वानों ने दण्डी के द्वारा लिखित प्रबन्धों में काव्यादर्श को प्रथम स्थान पर, दूसरे स्थान पर दशकुमारचरित को और तीसरे स्थान पर अवन्तिसुन्दरीकथा को स्वीकार किया है। कुछ विद्वानों ने दण्डी के चौथे ग्रन्थ के रूप में द्विसन्धानकाव्य को भी स्वीकार किया है किन्तु बहुधा विद्वानों ने द्विसन्धानकाव्य को दण्डी की चौथी रचना स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है। इस तरह दण्डी ने एक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ और दो गद्यात्मक कथा ग्रन्थों की रचना की।

वाल्मीकि और व्यास के बाद तीसरा स्थान दण्डी को ही प्राप्त है।

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत्।
कवी इति ततो व्यासे, कवयस्त्वयि दण्डिनि।।

वाल्मीकि के आने पर **कविः** शब्द बना व्यास के आने पर द्विवचन में **कवी** रूप हुआ तथा दण्डी का आविर्भाव होने पर ही बहुवचन रूप **कवयः** हो सका।

1) **काव्यादर्श** – यह तीन परिच्छेदों में निबद्ध एक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है। इसके प्रथम परिच्छेद में 105 कारिकाएं हैं जिसमें काव्य का महत्त्व, लक्षण, भेद, महाकाव्य, गद्यकाव्य, भाषाभेद तथा काव्यगुणों पर विचार किया गया है। द्वितीय परिच्छेद में 368 कारिकाएं हैं जिसमें अलंकारों का विवेचन किया गया है जिसमें उपमा, रूपक, दीपक आदि के भेद-प्रभेदों का विस्तृत वर्णन है। तृतीय परिच्छेद 187 कारिकाएं हैं जिसमें यमक अलंकार, चित्रकाव्य तथा काव्य-दोषों का विवेचन है।

2) **दशकुमारचरित** – यह दण्डी रचित गद्यकाव्य है। जिसमें कथा और आख्यायिका नामक दोनों गद्य भेदों के लक्षण दिए गए हैं। वर्तमान में सम्पूर्ण गद्य तीन भागों में उपलब्ध है।

1) **पाँच उच्छ्वासों की पूर्वपीठिका** – इसमें राजवाहन का जन्म (कुमारोत्पत्ति), मन्त्री पुत्रों का जन्म (द्विजोपकृतिः), सोमदत्त के साहसिक कार्य (सोमदत्तचरितम्), पुष्पोद्भव की साहसिक कथा (पुष्पोद्भवचरितम्), राजवाहन का अवन्तिसुन्दरी से विवाह (अवन्तिसुन्दरीपरिणयः) आदि का वर्णन है।

2) **आठ उच्छ्वासों का दशकुमारचरित** – इसमें आठ उच्छ्वास हैं कुमारों का चरित वर्णित है, राजवाहन-चरित, अपहारवर्मा-चरित, उपहारवर्मा-चरित, अर्थपाल-चरित, प्रमति-चरित, मित्रगुप्त-चरित, मन्त्रगुप्त-चरित, विश्रुत-चरित।

3) उत्तरपीठिका (उपसंहार) है।

दशकुमारचरित एक घटना प्रधान कथानक है। जिसमें नाना प्रकार की उल्लासमयी रोमांचक घटनाएँ पाठकों के हृदय में कभी विस्मय की और कभी विवाद की रेखाएँ खींचने में नितान्त समर्थ होती हैं। कभी पाठक भयानक जंगल के पास हिंसक पशुओं की चीत्कारों को सुनकर व्यग्र हो उठता है, तो कहीं समुद्र के बीच जहाज टूट जाने से अपने को पानी में काठ के सहारे तैरता हुआ पाता है। मित्रगुप्त के जीवन में जलयात्रा का एक बड़ा ही रोचक चित्र मिलता है। मित्रगुप्त ताम्रलिखित नामक प्रख्यात बंगीय बंदरगाह से किसी नवीन द्वीप में जहाज से जाता है। बहुत देर तक तैरने के बाद उसे एक काठ का तैरता हुआ टुकड़ा मिलता है। रात-दिन उसी के सहारे बिताने पर भवन नाविकों का एक जहाज दिखायी पड़ता है। जिसके कप्तान का नाम रामेषु है। भवनों के ऊपर एक युद्धतोप का आक्रमण होता है। भवन नाविक इस विपत्ति से विचलित हो जाते हैं। मित्रगुप्त जिसे जंजीरों से बाँधा गया था मुक्त हो गया। वह इस पोत के डाकुओं को अपनी वीरता से हराकर भवनों को बचाता है और उनसे पुरस्कृत होकर पुनः अपने स्वदेश लौट आता है। इसी प्रकार की रोमांच तथा साहस से भरी विस्मयावह घटनाओं से पूर्ण होने के कारण दशकुमारचरित का वातावरण नितान्त भौतिक है। दण्डी की प्रतिभा घटनाओं की यथार्थता में चरितार्थ होती है। यथार्थवाद यहाँ पूर्णतः प्रतिबिम्बित हो रहा है।

2.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

दण्डी की प्रशस्ति के रूप में **'दण्डिनः पदलालित्यम्'** अत्यधिक प्रसिद्ध है पदों का लालित्य, समासरहित सौम्य पदावली तथा अनुप्रासयुक्त नादसौन्दर्य दशकुमारचरित में मिलता है। सप्तम उच्छ्वास में जहाँ मन्त्रिगुप्त नियोष्ठवर्णों से अपना वृत्तान्त सुनाता है उस समय दण्डी को सुन्दर से सुन्दर पदावली की खोज करनी पड़ती है, जिससे वर्णसाम्यरूप अनुप्रास स्वतः स्फूर्त हो जाता है।

आचार्य दण्डी परिष्कृत गद्य-शैली के जन्मदाता हैं। गद्य का क्या स्वरूप होना चाहिए, उसमें भाव-भाषा-रस-अलंकारों का किस प्रकार समन्वय प्रस्तुत करना चाहिए, इसका आदर्श उन्होंने दशकुमारचरित में प्रस्तुत किया है। वे वैदर्भी शैली के कवि हैं। उनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य गुणों की पराकाष्ठा है। उनमें भावों की अभिव्यंजना की शक्ति इतनी प्रबल है कि कठिन से कठिन राजनीति आदि के तत्त्वों को सरलता से भाषा में प्रस्तुत कर सकते हैं। भावानुकूल पदावली का संचयन उनकी प्रमुख विशेषता है।

श्रृंगार, करुण आदि के वर्णनों में उनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य की मंजुल छटा दर्शनीय है, नखशिख वर्णन, प्रकृति-वर्णन आदि में समासयुक्त और सालंकार पदावली भी उनकी ही प्रौढ़ एवं परिष्कृत भाषा का रूप है। 'मधुराविजय' महाकाव्यकार गंगादेवी ने दण्डी की कृति को सरस्वती का मणिदर्पण बताया है।

आचार्यदण्डिनो वाचामचान्तामृतसम्पदाम्।
विकासो वेधसः पत्न्या विलासमणिदर्पणम्।।

कुछ आलोचकों का मत है कि कवित्व का परिपाक केवल दण्डी में ही दृश्य है, अन्यत्र नहीं।

कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः।

कल्पनाशील दण्डी की काव्यशैली वैदर्भी रीति का अनुसरण करती है। अर्थ की स्पष्टता, रस की सुन्दर अभिव्यक्ति, कल्पना की सजीवता और शब्द का लालित्य ये दण्डी की शैली के विशेष गुण हैं इसलिए इनके बारे में कहा गया है **'दण्डिनः पदलालित्यम्'**। इनकी रचना में माधुर्य गुण विशेष रूप से पाया जाता है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि इन्होंने ओज की तरफ ध्यान नहीं दिया।

ओजः समासभूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्।

इन्होंने लम्बे व छोटे समस्त प्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया है। दण्डी का दृष्टिकोण यथार्थवादी है। उन्होंने समाज के सभी पात्रों को लिया है क्योंकि इसमें राजा, राजकुमार, ब्राह्मण, भिक्षुक, चोर, राजकुमारियाँ, वेश्याएं, दम्भी और पाखण्डी सभी को सम्मिलित किया है। दण्डी ने ढूँढ-ढूँढकर सामाजिक बुराइयों को निकाला है। दण्डी को स्वच्छ समाज से प्रेम है, दम्भी और पाखण्डियों से नहीं। अतः कुलटा पत्नी धूमिनी, ऋषिमनोहारिणी काममंजरी, कार्मदक्ष उपहारवर्मा, योग्य आमात्य वसुरक्षित, धूर्ताधिराज विहारभद्र आदि के चरित्र का वर्णन करते हैं। भले-बुरे सभी कोटि के पात्र उनकी रचना में वर्णित हैं। उनमें मनोवांछित हर्षशोक, सुख-दुःख, रागद्वेष, प्रेम-घृणा, आशा-निराशा व्याप्त है। दण्डी आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी और व्यवहारवादी हैं। उन्होंने केवल सैद्धान्तिक शिक्षा न देकर व्यावहारिक शिक्षा भी दी है। व्यवहार कुशलता से जीवन सुखी बन सकता है यह दण्डी का लक्ष्य है। दण्डी निर्भीक, सुधारवादी, क्रान्तिकारी और व्यवहारकुशल कवि हैं।

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही (√) का चिह्न लगाइए –

   i) दशकुमारचरित में आठ उच्छ्वास हैं – ( )

   ii) 'राजवाहन' नामक राजकुमार का वर्णन दशकुमारचरित में है – ( )

   iii) दशकुमारचरित में दण्डी ने वैदर्भी रीति का प्रयोग किया – ( )

   iv) दण्डी रचित गद्यकाव्य कादम्बरी है – ( )

2) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर सही (√) का चिह्न लगाइए –

   i) 'राजवाहन' नामक राजकुमार का वर्णन है–

   क) दशकुमारचरित ख) मृच्छकटिक

   ग) रत्नावली घ) वेणीसंहार

   ii) दशकुमारचरित के अनुसार राजहंस की राजधानी थी–

   क) कुसुमपुर ख) उज्जयिनी

   ग) पुष्पपुरी घ) विदिशा

   iii) रोमांचक घटनाओं का वर्णन किस काव्य में है–

   क) हर्षचरित ख) दशकुमारचरित

   ग) कादम्बरी घ) वासवदत्ता

   iv) दशकुमारचरितम् में दण्डी ने किस रीति का प्रयोग किया–

   क) गौणी ख) वैदर्भी

   ग) पांचाली घ) अवन्ती